JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महात्मा गांधी के जीवन दर्षन एवं विचारों पर विविध ग्रंथों तथा व्यक्तियों का प्रभाव : एक विष्लेशणात्मक अध्ययन

डॉ.सियाराम मीणा
प्रोफेसर (हिन्दी)
राजकीय महाविद्यालय, कोटा

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व वि"वमानवता का प्रतिनिधि व्यक्तित्व है। उनके जीवन आद"ार्ों में आस्तिकता, नैतिकता और ई"वर के न्याय में आस्था, सत्य और अहिंसा, श्रम और कर्मनिष्ठा उनके सर्वोच्च आद"ार्ा हैं। 'महात्मा गांधी की सम्पूर्ण वैचारिकता का आधार आत्मानु"ाासन और नैतिकता के प्रति उनकी दृढ़ आस्था है। उनके विचार से जनतंत्र के काबिल लोग तभी हो सकते हैं, जब वे व्यक्तिगत रूप से अंदरूनी एवं बाह्य अनु"ाासनों को सपूर्ण रूप से स्वीकार करें एवं पूर्ण तत्परता से उनका पालन करें।[1] उनके विचार और द"ार्न आने वाले समाज का पथ–प्रद"ार्न करते रहेंगे। महात्मा गांधी के विचार और द"ार्न वि"व राजनीति और समाज के लिए अमूल्य वरदान हैं। उनके विचारों के मूल में सत्य और अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय, संयम और सदाचार, श्रम, त्याग और परोपकार, सत्याग्रह और नैतिकता, आचरण की शुद्धता और कर्मनिष्ठा, कर्तव्य पालन, आत्मानु"ाासन और आध्यात्मिकता जैसे गंभीर विचार बिन्दु है जिन पर जीवन भर निष्ठापूर्वक प्रयोग"ाील बनकर आचरण और व्यवहार किया। महात्मा गांधी के जीवन–द"ार्न को किसी एक व्यक्ति, संस्था, धर्म, सम्प्रदाय, दे"ा–विदे"ा दा"ार्निक–विचारक या साहित्य ने प्रभावित नहीं किया, उसमें अनके तत्व मिलकर एक अलग ही जीवन द"ार्न का निर्माण करते हैं। उनका जीवन सत्य की साधना, प्रयोग और खोज का जीवन है। इस मार्ग में जो भी उनके सामने आया, अपने लक्ष्य और साधना के अनुकूल उससे ग्रहण किया या अपनी साधना के परिणाम को परीक्षित किया या उसके औचित्य को प्रमाणित किया। गांधी जी के चिन्तन का लक्ष्य मानव कल्याण था। गांधी जी भारत के लिए स्वराज्य का सपना संजोय हुए थे, उनके स्वराज्य का अर्थ अत्यधिक व्यापक है। गांधी जी के कर्म क्षेत्र और विचारों में धर्म और नैतिकता सदैव उपस्थित रहे हैं। उनका मानना था कि मानव का उद्दे"य आत्म–साक्षात्कार करना है। यह तब ही संभव है जबकि मनुष्य धार्मिक एवं नैतिक हो।[2] उनके लिए नैतिकता से रहित धर्म धर्म नहीं है। उनके धर्म का अर्थ साम्प्रदायिकता भी नहीं है। धर्म शब्द उनके लिए बड़ा व्यापक शब्द है। वे अपने विचारों के बल पर वि"व राजनीति में धर्म (नैतिकता) और आध्यात्मिकता को मिलना चाहते थे। उन्होंने स्वराज्य के लिए कहा था कि जब तक एक की भी आंख में आंसू है तब तक स्वराज्य अधूरा है।[3]

कुंजी भाब्द : जीवन द"ार्न, विचार, आत्मानु"ाासन, नैतिकता, सत्य और अहिंसा, अपरिग्रह और अस्तेय, संयम और सदाचार, श्रम, त्याग और परोपकार, सत्याग्रह और नैतिकता, आचरण की शुद्धता और कर्मनिष्ठा, कर्तव्य पालन और आध्यात्मिकता।

भूमिका :

गांधी जी ने अपने विचार और चिन्तन से भारतीय समाज और राजनीति को न केवल नेतृत्व दिया अपितु उसकी दि"ाा ही बदल दी। इकबाल नारायण ने लिखा है कि मोहनदास करमचन्द गांधी का नेतृत्व एक असाधारण स्थिति का द्योतक था। राजनीतिक संघर्ष को साधनों की शुद्धि एवं प्राथमिकता से संयुक्त कर, अभयपूरित सुसभ्य आन्दोलन का आह्वान, वैचारिक तथा कर्मण्यवाद नवदृष्टि का द्योतक बना। सम्पूर्ण संवेदन"ाीलता से अनुप्राणित होकर गांधी ने यदि

सामाजिक परिवर्तन को संभाव्य स्तर पर उतारा, तो दूसरी ओर शक्ति केन्द्रित राजनीति के मानवीय, लोक सत्तापरक विकल्प को प्रस्तुत किया।[4]

जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जिनका प्रभाव व्यक्ति की सोच व दि"ाा को बदल देता है; उसके जीवन–द"ान को बदल देता है। व्यक्ति के विचारों, मन–मस्तिष्क और आचरण पर कई घटनाओं, सम्पर्कों, व्यक्तियों, पुस्तकों, लेखों व लेखकों का प्रभाव पड़ता है। गांधी जी के विचारों को प्रभावित व बल प्रदान करने वाले कई ग्रंथों व रचनाएं है। यहां एक बात और स्पष्ट कर देना होगा कि विचार और द"ान तभी प्रणवान और प्रेरक बनते हैं, जब समाज उनका प्रयोग करें, विचार और द"ान केवल सुन्दर पुस्तकों तक सीमित रहने से शोभा नहीं देते हैं। गांधी जी ने इन विचारों और द"ान को अपने जीवन के कर्म क्षेत्र के व्यवहारिक धरातल पर उतार कर न केवल जीवंत और प्रेरक बनाया अपितु समाज को भी नई दि"ाा दी।

विविध सदर्भ– ग्रंथ, व्यंक्ति, व्यवक्तित्व, प्रसंग और उनका प्रभाव

गांधी जी जीवन पर्यांत शाहकारी रहे। मां के कहने से उन्होंने विदे"ा में कई कठिनाइयों का सामने करने के बावजूद भी शाहकारी बने रहने का वृत नहीं तोड़ा। गांधी के शाकाहारी बने रहने में ताकत देने वाली एक पुस्तक है, जिसका गांधी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे लंदन में रहते हुए शाहकारी भोजनालय की तला"ा में रहते, एक दिन उन्हें फरिंग्टन स्ट्रीट में एक शाहकारी भोजनालय मिला, गांधी जी को लगा की अंधे को आंख मिल गई।[5] यहां गांधी को शाहकार के महत्व पर साल्ट की लिखि पुस्तक '"ााहाकार के पक्ष में एक अनुरोध' मिली। इस पुस्तक को उन्होंने खरीद लिया। जिसे उन्होंने पढ़ा, जिसका उनके ऊपर गहरा असर हुआ। अब तक वे मां के कहने से शाहकारी का वृत का पालन कर रहे थे। इस पुस्तक का प्रभाव यह पड़ा कि अब वे स्वेच्छा से शाहकारी बने। जिससे महात्मा गांधी की आध्यात्मिक व सात्विक मनोवृत्ति को बल मिला।

श्रवण–पितृभक्त नाटक और सत्य राजा हरि"चन्द्र नाटक का प्रभाव गांधी पर अमिट रहा। श्रवण–पितृभक्त नाटक से अपार सेवा व करूणा का बीज उनके हृदय में पैदा हुआ तो सत्य राजा हरि"चन्द्र नाटक से सत्य की अटल साधना और प्रयोग की भावना का बीजारोपण उनके हृदय में हुआ। एक बार पिताजी की खरीदी हुई एक पुस्तक 'श्रवण–पितृभक्त नाटक' पर उनकी नजर पड़ी। वे उसे आदि से अंत तक पढ़ गये। उसी समय शी"ो से चित्र दिखाने वालों से श्रवण का वह दृ"य भी देखा, जिसमें श्रवण कुमार अपने अंधे माता–पिता को कांवर में बिठाकर यात्रा पर ले जाता है। इस दोनों बातों का गांधी जी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। किस प्रकार श्रवण कुमार ने अपने अंधे माता–पिता की सेवा की। इससे उनके अन्दर सेवा का भाव संस्कार रूप में पड़ा। श्रवण किस प्रकार माता–पिता की तीर्थयात्रा की इच्छा को पूरा करने के लिए, उन्हें कांवर पर अपने कंधे पर रखकर, कष्ट सहकर भी यात्रा के लिए चल पड़ा तथा माता–पिता की सेवा में किस तरह वह बलिदान हो गया–ये सभी दृ"य कि"ोर मोहनदास के मन में गहरे उतर गये।[6] उनकी भी इच्छा होती थी कि वह भी श्रवण कुमार की तरह अपने माता–पिता की सेवा करें। श्रवण की मृत्यु पर उसके माता–पिता के विलाप का दृ"य उसके हृदय पर अंकित हो गया। मोहनदास के कोमल हृदय पर पड़ा सेवा और करूणा का यह प्रभाव उनके हृदय में मानवता के प्रति अपार करूणा, सेवा और त्याग की भावनाा को बलवती बना गया और मोहनदास मानवता की सेवा कर हमारे बीच महामानव बन गये, महात्मा बन गये।

गांधी जी की पूरी जीवन–यात्रा सत्य के पालन और प्रयोग की यात्रा है। उन पर भारतीय धर्म ग्रंथों और शास्त्रों व अन्य महान ग्रंथों का प्रभाव पड़ा था जिनमें नीति, सत्य, सदाचार, बलिदान, अहिंसा, नैतिकता, अपरिग्रह, आध्यात्मिकता, सेवा, धर्म, ईमान, कर्तव्य, पवित्रता, त्याग, कर्मनिष्ठा, सहन"ालता जैसे गुणों का बीजारोपण संस्कार रूप में हुआ। गांधी जी ने सत्य को ही ई"वर माना था और उसकी साधना में जीवनपर्यंत लगे रहे। सत्य के प्रति अटल निष्ठा की प्रेरणा गांधी जी को सत्यराजा हरि"चन्द्र के नाटक से मिली। उन्होंने राजकोट में एक नाटक कम्पनी द्वारा अभिनीत इस नाटक को पूरी तन्मयता के साथ देखा कि किस तरह राजा हरि"चन्द्र ने सत्य की परीक्षा में वि"वामित्र को अपना राजपाट दे दिया। यहां तक कि अपनी प्यारी पत्नी तारामती व पुत्र रोहितास को व स्वयं को बेचकर अपने वचन की रक्षा की। सत्य की पालना के लिए बड़े से बड़े कष्ट सहे। स्वयं कालू मेहतर का सेवक बन कर अपने स्वामी की सेवा की। मल–मूत्र उठाने का कार्य किया व श्म"ाान में दाह–संस्कार के समय कर(टैक्स) लेने के अपने कर्त्तव्य का दृढ़ता से पालन किया। अपनी भावनाओं पर काबू पाकर कर्त्तव्य का निर्वहन किया। पुत्र की मुत्यु के समय अपनी रानी तारामती से बिना कर (टैक्स) लिए पुत्र का दाह संस्कार नहीं करने देने के, उनके आचारण में सत्य की कठोरतम परीक्षा हुई और अंत में सत्य की जीत हुई। गांधी पर इस घटना के द्वारा सत्य के पालना का गहरा और मार्मिक प्रभाव पड़ा। उन्होंने महसूस किया कि राजा हरि"चन्द्र पर जैसी विपत्तियां पड़ी, वैसी विपत्तियों भोगना और सत्य का पालना करना ही जीवन का वास्तविक ध्येय है।[7] गांधी जी का घर धार्मिक आस्था और वातावरण का घर था। घर में रामायण का पाठ होता था, उसका भी मोहनदास के मन पर संस्कार रूप में अच्छा असर हुआ। महात्मा गांधी **तुलसी कृत रामचरित मानस** को भक्ति–मार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानते थे। इसके अलावा भागवत का व **अन्य हिन्दू धर्म ग्रंथों** का उन्होंने अध्ययन किया था जिसका

प्रभाव उनके विचारों और मानवीय दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव पड़ा। यहां यह कहना अनुचित न होगा कि गांधी जी ने सभी तरह के विचारों और मान्यताओं को जाना लेकिन वे अंधनुकरण नहीं करते थे। उचित–अनुचित और विवके की तराजु में तोलकर ही, जांच परखकर ही अमल करते थे। उन्होंने मनुस्मृति का भी अध्ययन किया था लेकिन मनुस्मृति को पढ़कर तो उनमें ऐसी कपोल–कल्पित बातों पर अनास्था ही पैदा हुई।[8]

भारतीय साहित्य में गांधी पर सबसे अधिक गहरा प्रभाव **गीता** का है। यह गांधी जी की ही दृष्टि का परिणाम है कि उन्होंने गीता में भी अहिंसा का संधान किया। गांधी जी कर्मपूजक थे, निष्काम कर्म की भावना उनमें भरी हुई थी। भगवद् गीता उनके लिए जीवन की शक्ति थी तथा जिस तरह संतान(व्यक्ति) माता का आश्रय पाकर धर्य, आत्म वि"वास और शक्ति ग्रहण करता है, गीता गांधी जी के लिए जीवन संघर्ष में माता की भांति ही थी। भगवद् गीता से गांधी जी ने जीवन संघर्ष के सूत्र प्राप्त किये थे। **भगवद् गीता** का प्रथम बार अध्ययन से ही गांधी जी अत्यधिक प्रभावित हुए, जब वे विलायत में थे तब उनके थियोसॉफिस्ट मित्रों ने गांधी को गीता पढ़ने का न्योता दिया। पहली बार गीता के श्लोकों को पढ़ने से पड़े प्रभाव को व्यक्त करते हुए गांधी जी लिखते है कि 'इस श्लोकों का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी भनक मेरे कान में गूंजती ही रही। उस समय मुझे लगा कि भगवद् गीता अमूल्य ग्रंथ है। यह मान्यता धीरे–धीरे बढ़ती गई, और आज तत्वज्ञान के लिए मैं उसे सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूँ। निरा"ाा के समय में इस ग्रंथ ने मेरी अमूल्य सहायता की है।[9]

कर्म, श्रम, उद्यम, निष्काम कर्म, अहिंसा, परोपकार, अनासक्ति पूर्ण आचरण, निस्वार्थ भाव से सेवा भावना, जीवन में सत्य–असत्य और धर्म–अधर्म के संघर्ष की वास्तविकता, हिंसा में अहिसां का संधान, हिंसा के नकारत्मक रूप के प्रति वितृष्णा, सेवा के लिए श्रम आदि कई कर्म जीवन के सूत्र गांधी जी ने गीता में खोज हैं। गांधी जी लिखते हैं कि आज गीता मेरे लिए केवल बाइबिल नहीं है, केवल कुरान नहीं है, मेरे लिए वह माता हो गई है। मुझे जन्म देने वाली माता चली गई, पर संकट के समय गीता माता के पास जाना सीख गया हूँ। मैंने देखा जो कोई माता की शरण में जाता है उसे ज्ञानामृत से तृप्त करती है।[10] उन्होंने भगवत गीता को अमर माता की संज्ञा दी है। वे लिखते हैं कि 1888–89 में मुझे गीता का प्रथम द"ान हुआ। मुझे ऐसा लगा कि यह एक ऐतिहासिक ग्रन्थ ही नहीं है, वरन इसमें भौतिक युद्धों के बहाने प्रत्येक मनुष्य के भीतर निरंतर होते रहने वाले द्वंद्वों का वर्णन है। मानुषी योद्धाओं की रचना हृदयगत युद्धों को रोचक बनाने के लिए गढ़ी गई कल्पना है। यह गीता का वि"ोष अध्ययन करने के बाद पक्की हुई। वह जीवन के संघर्षमय तूफानों से लड़ने की ताकत देती है। गीता जीती–जागती जीवन देने वाली अमर माता है...गीता माता का आश्रय लेने वाले भयंकर तूफानों से भी उबर जाते हैं। वह नित्य जागृत है, वह कभी धोखा नहीं दे सकती।'[11] राके"ा कुमार झा ने लिखा है कि साधारण पाठक के पढ़ने पर उसे गीता हिंसा व युद्ध समर्थक लगेगी क्योंकि कृष्ण ने अर्जुन से युद्ध न करने के विचार का विरोध किया था। लेकिन महात्मा गांधी ने इस ग्रंथ में अहिंसा का विचार भी देखा। गांधी के विचार में हिंसा तो (अर्थात् युद्ध) एक कल्पना है, उस कल्पना के माध्यम से कवि ने भौतिकता पर आध्यात्म के विचार को बैठाया है। गांधी पर गीता के प्रथम अध्याय में वर्णित अर्जुन के व्यवहार का भी प्रभाव पड़ा, जिसमें अर्जुन हिंसा करने से मना करता है।'[12] वस्तुतः गांधी ने गीता को अपने दृष्टिकोण से समझा है। वे लिखते हैं कि जब संदेह मुझे परेशान करता है, जब निराशाएं मुझे घूरती हैं और जब मैं क्षितिज पर प्रकाश की एक किरण नहीं देखता हूं, तो मैं भगवद् गीता की ओर मुड़ता हूं और मुझे आराम देने के लिए एक कविता ढूंढता हूं और मैं तुरंत भारी दुःख के बीच मुस्कराने लगता हूं। मेरा जीवन बाहरी त्रासदियों से भरा हुआ है और अगर उन्होंने मुझ पर कोई प्रभाव नहीं छोड़ा है, तो मैं इसे भगवती के उपदेशों के कारण मानता हूं। (महात्मा गांधी) वास्तव में गांधी के लिए गीता आत्मिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति और प्रेरणा का अहम् श्रोत थी। गांधी जी ने गीता से अनासक्तिपूर्ण आचरण, परोपकार और सेवा की प्रेरणा ग्रहण की। उन्होंने गीता माता में एक स्थान पर लिखा है कि जो अनासक्तिपूर्ण आचरण करता है, वही ई"वर से साक्षात्कार करता है। उनका कहना है कि गीता मेरे लिए आधार की प्रोढ़ मार्गदि"ाका है।[13] गांधी जी गीता के तीसरे अध्याय से बहुत प्रभावित थे जिसमें जीवन को यज्ञ (त्याग, सेवा, परोपकार और श्रम की भावना निहित) की भांति मानने की प्रेरणा मिली। वे लिखते हैं कि 'इस अध्याय को (तीसरा अध्याय) मैंने गीता को समझने की कुंजी कहा है। एक वाक्य में उसका स्पष्ट सार यही है कि जीवन सेवा के लिए है, भोग के लिए नहीं, अतः हमें जीवन को यज्ञमय बनाना उचित है। पर इतना जान लेने भर से वैसा हो जाना संभव नहीं। जानकर आचरण करने में हम उत्तरोतर शुद्ध हो जायेंगे। पर सच्ची सेवा क्या है, यह जानने के लिए इन्द्रिय दमन आव"यक है। इस प्रकार हम उत्तरोत्तर सत्यरूपी परमात्मा के निकट जाते हैं। युग–युग में सत्य की अधिक झांकी होती है, स्वार्थ की दृष्टि से किया कार्य सेवा कार्य नहीं है।[14] इस प्रकार कहा जा सकता है कि गांधी जी के चिन्तन पर गीता का प्रभाव बहुत गहरा है। गीता से उनकी अहिसां और निष्काम मानव सेवा की भावना बलवती हुई है। इन प्रभावों का ही परिणाम है कि गांधाी की अहिसां कायरों की अहिंसा नहीं, असहाय लोगों की अहिंसा नहीं, वह वीरयोद्धा की अहिंसा है, उनकी वीरतापूर्ण दयालुता के सामने आततायी अंग्रेजों की राज"ाक्ति ने भी घुटने टेक दिये।[15] गांधी जी ने गीता से राष्ट्रधर्म की प्रेरणा ली, राष्ट्र के लिए निष्काम कर्म की प्रेरणा ली और राष्ट्र की मुक्ति के लिए अहिंसा मार्ग अपना कर राष्ट्र को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराया। प्रोफेसर राममूर्ति ने ठीक लिखा है कि गांधी ने गीता से प्रेरणा लेकर एक नये ढ़ंग से राष्ट्रीय धर्म का शंख फूका, भारतीय राष्ट्र की आत्म"ाक्ति जागी। राष्ट्रीय मुक्ति का यह धर्म–युद्ध वस्तुतः निष्काम कर्म

का ही पदार्थ पाठ था। फल की वासना त्यागकर पराक्रम करते जाने का एक नया अध्याय था। गीता का निष्काम कर्म गांधी की अहिंसा में उतरा और उसने अर्जुन तैयार किये। अन्त में राष्ट्र मुक्त हुआ।[16]

गांधी जी ने **तुलसी कृत रामचरित मानस** के प्रभाव को भी स्वीकार किया है। बचपन में ही गांधी जी को रामायण का पाठ सुनने को मिल गया था। वे उससे बहुत प्रभावित थे। वे लिखते है कि पर जिस चीज का मेरे मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, वह था रामयण का पारायण। ... यह रामायण श्रवण रामायण पर मेरे अत्यधिक प्रेम की बुनियाद है। मैं आज तुलसीदास की रामायण को भक्ति मार्ग का सर्वोत्तम ग्रंथ मानता हूँ। उसने मेरे मन में रामायण के प्रति गहरी श्रद्धा की जड़ मजबूत की।[17] इसके साथ ही गांधी जी ने अपनी जीवनी में बुद्ध चरित और बाइबल के महत्व और प्रभाव को भी स्वीकार किया है। उन्होंने रसपूर्वक बुद्ध चरित को पढ़ा। बाइबल के न्यू टेस्टामेंट के बारे में लिखा है कि जब में नये इकरार(न्यू टेस्टामेंट) पर आया, तो कुछ और ही असर हुआ। ईसा के 'गिरि–प्रवचन' का मुझ पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। उसे मैंने हृदय में बसा लिया। बुद्धि ने गीता जी के साथ उसकी तुलना की। 'जो तुझे से कुर्ता मांगे उसे अंगरखा भी दे दे' जो तेरे दाहिने गाल पर तमाचा मारे, बायां गाल भी उसके सामने कर दें'–यह पढ़कर मुझे अपार आनन्द हुआ। ... मन को यह बात जंच गई कि त्याग में धर्म है।[18] इस प्रकार गांधी जी ने बाइबल में त्याग, सेवा और बलिदान की भावना का संधान किया।

उपनिशद हमारे ऋषि–मुनियों की साधना, चिन्तन और द"र्न का सार रूप है। गांधी चिन्तन, जीवन द"र्न, कर्म और मान्यताओं पर उपनिषद साहित्य का गहरा प्रभाव है। गांधी जी ने इनके अध्ययन से अपनी दृष्टि, दि"ा और मान्यता के अनुसार सार रूप ग्रहण किया है। गांधी जी जिन भजनों एवं गीतों को पढ़ते थे, वे उपनिषदों यथा–**ई"ा, मुंडक, कथ, तैत्तिरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक** आदि से ही लिए गये थे। गांधी जी जिस उपनिषद से सबसे ज्यादा प्रभावित थे; वह है–**ई"ोपनिशद।** वह गांधी जी का अत्यधिक प्रिय ग्रंथ था। इनके माध्यम से गांधी जी ने अपने जीवन में अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, आध्यात्मिक चेतना और आस्था, त्याग, कर्मनिष्ठा जैसे सिद्धांतों को दृढ़ किया। गांधी जी के द"र्न और विचारों को **महाभारत** ने भी प्रभावित किया है। उन्होंने महाभारत को मानव के भीतर होने वाले मौलिक व आध्यात्मिक द्वन्द्व का वर्णन माना है तथा यह अनुभव किया है कि यह ग्रंथ आध्यात्मिक शक्ति की भौतिक शक्ति की तुलना में श्रेष्ठता प्रतिपादित करता है।[19]

यह बात सत्य है कि गांधी जी का समूचा जीवन सत्य की खोज, सत्य के प्रयोग और अन्वेषण का पर्याय। उन्होंने अपना सारा जीवन सत्य की खोज में लगा दिया। और अन्त में उन्होंने सत्य को इ"वर तुल्य और अहिंसा को सबसे बड़ा अस्त्र माना। अहिसां की ताकत पर उन्होंने दे"ा को आजाद कराया। यह अहिंसा की ताकत का परीक्षण और परिणाम था।

गांधी जी के विचारों और व्यक्तित्व पर तीन व्यक्तियों का गहरा प्रभाव है। उन्होंने स्वीकार किया है कि मेरे जीवन पर गहरी छाप डालने वाले आधुनिक तीन पुरूष हैं– **रायचन्द भाई ने अपने सम्पर्क से, टालस्टाय ने 'स्वर्ग तेरे हृदय में' अपनी पुस्तक से और रस्किन ने 'अन्टु धिस लास्ट' पुस्तक ने** मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया।[20] वास्तव में गांधी टालस्टाय से बहुत प्रभावित और प्रेरित थे, कहा जा सकता है कि वे गांधी के प्रेरक थे। गांधी जी ने पाया कि टालस्टाय में विचार और विचारानुकूल व्यवहार और कार्य, सत्य, सत्यता की खोज की निरंतरता, अहिंसा, ब्रेड–लेबर ("ारीरिक श्रम), कथनी और करनी में समानता, त्याग और सादगी, परोपकार और निःस्वार्थ परोपकार, आचारण की सत्यता या सत्यता का आचरण, सिद्धांत को कर्म जीवन और व्यवहार में उतारना उनके जीवन और द"र्न की मूल वि"ोषताए हैं। गांधी और टालस्टाय अहिंसा के कट्टर समर्थक थे, अराजकतावादी थे, कानून, कचहरी, पुलिस, मिलट्री, स्कूल, निजी सम्पत्ति व पूंजीवाद का विरोध, सिद्धांत और व्यवहार की समानता के समर्थक, उद्योगवाद का विरोध, शारीरिक श्रम के प्राचीन व सरल तरीकों के समर्थक, आध्यात्मिक सत्ता से प्रेरणा प्राप्त कर लौकिक शासन का प्रतिकार करने की भावना समान रूप से थी। गांधी जी टालस्टाय से इन्हीं कारणों से बहुत प्रभावित थे। गांधी जी ने 10 सितंबर 1928 को साबरमती आश्रम के नवयुवक संघ द्वारा मनाये गये टॉलस्टाय जन्म–"ताब्दी समारोह में अपने भाषण में टालस्टाय की f"ाष्टता और प्रभाव को प्रकट करते हुए कहा था कि टॉल्सटॉय के जीवन में मेरे लेखे दो बातें महत्वपूर्ण थीं. वे जैसा कहते थे वैसा ही करते थे। उनकी सादगी अद्भुत थी, बाह्य सादगी तो उनमें थी ही। वे अमीर वर्ग के व्यक्ति थे, इस जगत के सभी भोग उन्होंने भोगे थे। धन–दौलत के विषय में मनुष्य जितने की इच्छा रख सकता है, वह सब उन्हें मिला था। फिर भी उन्होंने भरी जवानी में अपना ध्येय बदल डाला। दुनिया के विविध रंग देखने और उनके स्वाद चखने पर भी, जब उन्हें प्रतीत हुआ कि इसमें कुछ नहीं है तो उनसे उन्होंने मुंह मोड़ लिया, और अंत तक अपने विचारों पर डटे रहे। इसी से मैंने एक जगह लिखा है कि टॉल्स्टॉय इस युग की सत्य की मूर्ति थे. उन्होंने सत्य को जैसा माना तद्नुसार चलने का उत्कट प्रयत्न किया। सत्य को छिपाने या कमजोर करने का प्रयत्न नहीं किया। टॉल्सटॉय अपने युग के अहिंसा के बड़े भारी समर्थक थे। जहां तक मैं जानता हूं, अहिंसा के विषय में पश्चिम के लिए जितना टॉल्स्टॉय ने लिखा है उतना मार्मिक साहित्य दूसरे किसी ने नहीं लिखा। उससे भी आगे जाकर कहता हूं कि अहिंसा का जितना सूक्ष्म दर्शन और उसका पालन करने का जितना प्रयत्न टॉल्स्टॉय ने किया था उतना प्रयत्न करने वाला आज हिन्दुस्तान में कोई नहीं है। गांधी जी को इस बात का दुःख था कि अहिंसा के मामले में सैद्धांतिक दृष्टि से हमारे दे"ा का द"र्न और धार्मिक ग्रंथ भरे पड़े है। लेकिन हमने उनका

जीवन में सक्रीय व्यवहार नहीं किया। सिद्धांत को कर्म में तबदील नहीं किया। हम धार्मिक कहलाकर भी अधर्म के मार्ग पर चलने से गुरेज नहीं रखते। हमारा व्यवहार हिसां पर चलने वाला है। इसलिए वे अपने भाषण में आगे बताते हैं कि हमारे इस अहिंसा–प्रधान देश की ऐसी दयनीय दशा है. हमारी अहिंसा निंदा के ही योग्य है. खटमल, मच्छर, पिस्सू, पक्षी और पशुओं की किसी न किसी तरह रक्षा करने में ही मानो हमारी अहिंसा की इति हो जाती है. यदि वे प्राणी कष्ट में तड़पते हों तो भी हमें उसकी चिन्ता नहीं होती। अहिंसा के मानी हैं प्रेम का समुद्र, अहिंसा के मानी हैं वैरभाव का सर्वथा त्याग। अहिंसा में दीनता, भीरुता नहीं होती, डर–डरकर भागना भी नहीं होता। अहिंसा में तो दृढ़ता, वीरता, अडिगता होनी चाहिए।[21]

एक दूसरे अद्भुत विषय पर लिखकर और उसे अपने जीवन में उतारकर टॉल्स्टॉय ने उसकी ओर हमारा ध्यान दिलाया है. वह है ब्रेड लेबर (खुद शरीर श्रम करके अपना गुजारा करना). यह उनकी अपनी खोज नहीं थी। किसी दूसरे लेखक ने यह बात रूस के सर्वसंग्रह (रशियन मिसलेनी) में लिखी थी। इस लेखक को टॉल्स्टॉय ने जगत के सामने ला रखा और उसकी बात को भी प्रकाश में लाया। जगत में जो असमानता दिखाई पड़ती है, एक तरफ दौलत और दूसरी तरफ कंगाली नजर आती है, उसका कारण यह है कि हम अपने जीवन का कानून भूल गए हैं। यह कानून ब्रेड–लेबर है। गीता के तीसरे अध्याय के आधार पर मैं इसे यज्ञ कहता हूं। गीता ने कहा है कि जो बिना यज्ञ किए खाता है वह चोर है, पापी है। वही चीज टॉल्स्टॉय ने बतलाई है। ऐसा नहीं है कि टॉल्सटॉय ने जो कहा वह दूसरों ने न कहा हो, लेकिन उनकी भाषा में चमत्कार था और इसका कारण यह है कि उन्होंने जो कहा उसका पालन किया। गद्दी–तकियों पर बैठने वाले टॉल्स्टॉय मजदूरी में जुट गए। आठ घंटे खेती का या मजदूरी का दूसरा काम उन्होंने किया। शरीर–श्रम को अपनाने के बाद से उनका साहित्य और भी अधिक शोभित हुआ।[22] गांधी के उक्त भाषा और भाषण में निहित भावना से स्पष्ट है कि गांधी टालस्टाय के विचारों से कितने प्रभावित थे।

गांधी जी जब जोहांस्बर्ग से नेटाल के लिए रवाना हुए तो **पोलक** ने स्टे"ान तक छोड़ने आत वक्त गांधी को रस्किन की 'अन्टु धिस लास्ट' दी और कहा कि यह पुस्तक पढ़ने योग्य है। गांधी जी ने 24 घण्टे के इस रास्ते में पुस्तक को पढ़ा। उन्होंने कहा है कि इस पुस्तक को हाथ में लेने के बाद मैं छोड़ न सका। इसने मुझे पकड़ लिया। डरबन पहुंचने के बाद उन्हें सारी रात नींद नहीं आई। मैंने पुस्तक में सूचित विचारों को अमल में लाने का इरादा किया। ... इन पुस्तकों में से जिसने मेरे जीवन में तत्काल महत्व के रचनात्मक परिवर्तन कराये, वह 'अंटु धिस लास्ट' ही कही जा सकती है। मेरा वि"वास है कि जो चीज मेरे अन्दर गहराईयों में छिपी पड़ी थी, रस्किन के ग्रंथरत्न में मैंन उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखा।[23] गांधी जी ने 'सर्वोदय' नाम से इसका गुजराती में अनुवाद किया। इस पुस्तक से गांधी ने सर्वोदय की धारण के सूत्र खोजे। उन्होंने इस पुस्तक से सर्वोदय के सूत्र को इस प्रकार प्रस्तुत किया– 1. सबके भले में अपना भला समाया हुआ है। 2. वकील और नाई दोनों के काम की कीमत एक सी होनी चाहिए, क्योंकि आजीविका का अधिकार सबको एक समान है। 3. सादा मेहनत–मजदूरी का, किसान का जीवन ही सच्चा जीवन है।[24] सर्वोदय की धारणा में इन तीन सूत्रों में सामाही हुई है। गांधी जी ने इन सूत्रों के बारे में स्पष्ट लिखा है कि पहली चीज मैं जानता था, दूसरी की मैं झलक पा रहा था तथा तीसरी को मैंने साचा ही नहीं था। सर्वोदय ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया कि पहली चीज में दूसरी दोनों चीजें समायी हुई हैं। सवेरा हुआ और में इन सिद्धांतों पर अमल करने के प्रयत्न में लगा।[25] रस्किन के प्रभाव को गांधी जी कर्म और व्यवहार में लाना चाहते थे इसीलिए उन्होंने वेस्ट से 'इडियन ओपीनियन' को खेत में ले चलने का प्रस्ताव रखा, जहां सभी को अपने–अपने हिस्से का खेती से संबंधित सामूहिक रूप से शारीरिक श्रम करना था। इस प्रकार फिनिक्स की स्थापना कर रस्किन के प्रभाव को साकार किया। इस प्रकार शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा, सहकार श्रम की धारणा, धनलोलुपता और औद्योगिकरण का विरोध, लघु स्तर की मिलों व कृषि को प्राथमिकता, ट्रस्टी"िप की धारणा, धन और बुद्धि का उपयोग रोजगार और लोगों की सामान्य भलाई के लिए हो, म"ाीन की तुलना में मनुष्य को प्राथमिकता आदि विचारों पर रस्किन का प्रभाव है। गांधी जी की सत्याग्रह धारणा थोरू से प्रभावित और पुष्टि है। गांधी जी ने थोरू के 'ऐसे आन सिविल डिसओबीडियेन्स' को 1908 में पढ़ा था जब वे दक्षिण अफ्रिका में अपने कारावास का दण्ड भुगत रहे थे। हालांकि इस पुस्तक को पढ़ने से पूर्व ही गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन काफी प्रगति कर चुका था लेकिन इस पुस्तक को पढ़ने से उनकी सत्याग्रह की धारणा को बल मिला तथा उसकी पुष्टि प्राप्त की।[26]

वी.पी. वर्मा का मान्यता है कि महात्मा गांधी पर **प्लेटो** का भी प्रभाव रहा है। गांधी जी ने प्लेटो की पुस्तक 'एपोलोजी' गुजराती में अनुवाद किया था। उन्होंने गांधी पर प्लेटो के प्रभाव को इस प्रकार चिन्हित किया है– गांधी के दिलो–दिमाग में सुकरात का एक अहिंसावादी योद्धा के स्वरूप में छाप, सभ्यता के बाहरी आडंबर के प्रति गांधी के विकर्षण की मजबूरी, वार्तालापीय विधि में लेखन के प्रति सम्भावित आकर्षण जैसा कि हिन्द स्वराज में हैं।[27]

निश्कर्श :

वस्तुतः गांधी जी के लिए जीवन सीखने और प्रयोग करने की पाठ"ाला रहा है। उन्होंने उनके सम्पर्क में जो सामान्य और महान व्यक्ति आये, सामान्य और महान पुस्तकें, ग्रंथ आये उनमें मानव कल्याण के विचारों को सीखा तथा

परखा और अपनाया। इसके लिए सभी प्रभावों को एक मानक के रूप में प्रस्तुत करना संभव नहीं है। फिर भी समय–समय पर स्वयं गांधी जी ने उनके प्रभाव को माना तथा सराहा है। वास्तव में गांधी जी का चिन्तन और द"ान जीवन का ऐसा मार्ग प्र"ास्त करता है जिसमें मानव कल्याण और वि"व कल्याण की भावना निहित है। उन्होंने अपनी सभी मान्यताओं और धारणाओं को अपने व्यवहार में उतारकर परखा। उन्होंने अपने चिन्तन को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ा तथा व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया। वास्तव में गांधी के चिन्तन को कर्म और व्यवहार से अलग करके नहीं समझा जा सकता। उसकी महता कर्म और व्यवहार में उतारने में ही निहित है।

संदर्भ :

1. महात्मा गांधी और अस्पृ"यता : समस्या और विकल्पः द्वारका प्रसाद गुप्ता, ज्ञान भारती रूपनगर दिल्ली प्र.सं. 1998,पृ.सं.57
2. गांधी चिन्तन : के.एल.कमल, जयपुर पब्लि"िंग हाउस, जयपुर प्र.सं.1995 पृ.सं.28
3. महात्मा गांधी : धर्म,पंथ एवं राजनीति, डॉ.आद"ा कुमार माथुर, रितु पब्लिके"ांन्स जयपुर प्र.सं.2010 पृ.सं.40
4. गांधी चिन्तन : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य भाग–एक, सं. आ"ाा कौ"िाक, प्रिंटवैल जयपुर प्र.सं.1995 पृ.सं.10
5. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान, जयपुर, प्र.सं. 1996 पृ.सं.23
6. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान, जयपुर, प्र.सं. 1996 पृ.सं.5
7. महात्मा गांधीः जीवन और द"ान रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान, जयपुर, प्र.सं. 1996, पृसं.5–6
8. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान, जयपुर, प्र.सं. 1996 पृ.सं.16
9. सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा : महात्मा गांधी, नव जीवन प्रका"ान मंदिर, इलाहबाद, प्र.सं.1987, पृ.सं.62
10. गीता की महिमाः महात्मा गांधी, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1978, पृ.सं.01 20
11. गांधी चिन्तन में सर्वादय : राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, जयपुर, प्रा.सं.1995, पृ.सं.20
12. गांधी चिन्तन में सर्वोदय : राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, एसएमएस हाइवे जयपुर प्र.सं.1995, पृ.सं.20
13. गांधी चिन्तन में सर्वोदय राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, एसएमएस हाइवे जयपुर प्र.सं.1995, पृ.सं.22
14. गीता माता : महात्मा गांधी (संकलन स.सा.म.) पृ.21 नई दिल्ली
15. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान मूल लेखक रोमां रोलां, अनु.प्रफुल्लचन्द ओझा'मुक्त' लोकभारती प्रका"ान, इलाहबाद, चतुर्थ सं. 1993, पृ.सं.15
16. गांधी मार्ग : प्रो.प्रोफेसर राममूर्ति(गीता आत्मा का अमर गीत), पृ.3
17. गांधी–सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा, सस्ता साहित्य मंडल, पृ.42, नई दिल्ली1982
18. गांधी–सत्य के प्रयोग अथवा आत्म अनु.का"िानाथ त्रिवेदी, कथा,नवजीवन प्रका"ान मंदिर, अहमदाबाद,1987 पृ.सं. 63
19. गांधी चिन्तन में सर्वोदय : राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, एसएमएस हाइवे जयपुर प्र.सं.1995, पृ.सं.25
20. महात्मा गांधी : जीवन और द"ान, रामलाल विवके, पंच"ाील प्रका"ान जयपुर, प्र.सं.1996 पृ.सं.26
21. https://satyagrah.scroll.in
22. https://satyagrah.scroll.in
23. सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथा : महात्मा गांधी, अनु. का"िानाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रका"ान मंदिर, अहमदाबाद प्र.सं. 1957पृ. 271
24. सत्य के प्रयोग अथवा आत्म कथाः महात्मा गांधी, अनु. का"िानाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रका"ान मंदिर, अहमदाबाद प्र.सं. 1957 पृ. 271
25. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा : महात्मा गांधी,अनु.का"िानाथ त्रिवेदी,नवजीवन प्रका"ान मंदिर, इलाहबाद,प्र.सं. 1987 पृ.सं.271
26. गांधीय चिन्तन में सर्वोदय : राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, एसएमएस हाइवे जयपुर प्र.सं.1995, पृ.सं.27
27. गांधी चिन्तन में सर्वोदयः राके"ा कुमार झा, पोईन्टर पब्लि"ार्स, एसएमएस हाइवे जयपुर प्र.सं.1995, पृ.सं.27

————————————————————————————————————